31/3/1967 शुक्रवार प्रातः क्लास
रिकॉर्ड– न वो हमसे जुदा होंगे, न उलफत दिल से निकलेगी.....
गाइड्स। गाइड क्या दर दिखलाते हैं? स्वर्ग जाने का गेट दिखलाते हैं। भई ये ठीक है ना। देखो अभी नाम इनको दिया है बच्चे को– गेट वे यानी रस्ते के तरफ जाना, गेट का रस्ता। वे कहा जाता है रस्ते को, गेट कहा जाता है फाटक को। ये स्वर्ग का फाटक कभी(कब) खुलता है? ये तो नर्क है ना बच्ची, हेल है ना। हैविन का फाटक कब खोलते हैं और कौन खोलते हैं? ये दुनियाँ तो इन बातों को नहीं जानती है। तुम बच्चों को जिनको सदैव खुशी रहती है और ये सभी चित्र वगैरह बनाते हो समझाने के लिए। गेट वे टू हैविन– हैविन में जाने के लिए रास्ता, उसकी प्रदर्शनी कि कैसे जा सकते हैं मनुष्य स्वर्ग द्वार। ये नर्क द्वार है; वो स्वर्ग द्वार। अभी चित्र तो देखो तुमने बहुत बनाए हैं, बाबा ने रात को कहा ना– अच्छा, ये कुछ काम का नहीं, ये कुछ काम का नहीं, ये कुछ काम का नहीं। अच्छा बाबा, बस बाबा पूछते हैं बच्चों से– तो इन सबमें चित्र में कौन–सा अच्छा चित्र है, जिससे हमको गेट का द्वार देखने में आता है? चलो, बताओ। ये जो इतने सभी चित्र हैं, इसमें कौन–सा एक चित्र है, जिससे हम किसको भी समझाय सकें– ये है स्वर्ग में जाने का गेट? कौन–सा चित्र है, दिखलाओ। नाम बताओ चित्र का। हाँ, सब बताओ, मैं प्रश्न पूछता हूँ ना। रात को तुम अजब खाते, मैंऽऽऽ..... ये कुछ नहीं। समझा ना! अभी बाबा पूछते हैं कि तुम बताओ, ये कौन–सा चित्र सबसे फर्स्टक्लास है जिससे गेट (...)? (भाई ने कहा– सबसे पहला.. स्वर्ग का रचता और उसकी रचना) सबसे पहला..। अच्छा चलो, भई दूसरा? (किसी ने कहा– त्रिमूर्ति) त्रिमूर्ति अच्छा! (फिर कहा–गोला) गोला। ...अरे पर एक बताओ, ये तो दो हैं। (किसी ने कहा– बाबा, ये एक ही चित्र, एक ही है) बात सुनो, ये तो ठीक है; पर मुझे गेट बताओ। (किसी ने कहा– गेट, सामने बैठीऽऽऽ) जिसने ये बताया, इसने अच्छा ये बताया। अरे भई, तुम बताओ बच्ची! ये सभी चित्रों में हमको गेट बताओ। समझे, स्वर्ग में जाने का गेट बताओ। इसमें कोई है कोई चित्र में गेट बताने का? तुम बताओ। (किसी भाई ने कहा– बाबा, गीता का भगवान कौन है, ये समझेंगे तो गेट हो जाएगा।) अच्छा ये समझेंगे। चलो भई, तुम बताओ। ....हाँ, तुम बताओ। कोई बताने वाला है? जो बताय सकते हैं सो हाथ उठाकर बताओ, इसमें क्या है! (किसी ने कहा– बाबा, झाड़ में आ जाते हैं सारे)। ये झाड़ है, अच्छा बस, भल चित्र, हम चित्रों के लिए रात को इतना तुमको बोला ना, तुम हँसने लगे– शिवबाबा क्या कहते हैं, ये सभी फालतू। अच्छा, ये बोलता है झाड़। (किसी ने कहा– बाबा, सीढ़ी) सीढ़ी अच्छा चलो, और भी कोई है! (किसी ने कहा– चक्कर) ये कहते हैं चक्कर। अच्छा भई चक्कर। अच्छा, इसने कहा त्रिमूर्ति, उसने कहा चक्कर, उसने कहा सीढ़ी, इसने कहा ये। अच्छा, और बताओ। (किसी ने कहा– पहले–2 शिवबाबा) शिवबाबा चलोअलो। भई नाम लेकर नोट करते जाओ, मैं आज देखो (...)। अच्छा, और बताओ। तो देखो, चित्रों की बात निकालता हूँ ना। (किसी ने कहा– जी) रात को मैं बोला– येऽऽऐऽऽ, ये खेल है खेल। अच्छा, और भी किसको बताना है! (किसी ने कहा–बाबा, विराट स्वरूप) विराट स्वरूप किसे, कहाँ है, ओ ये! जो बाबा ने बनाया है, मँगाया है अभी। अच्छा भई चलो, विराट स्वरूप। अच्छा, और कुछ बताओ। (किसी ने कहा– बाबा, नर्क और स्वर्ग का गोला) वो कहाँ है? (किसी ने कहा– उस तरफ) (किसी ने कुछ कहा) ...तुम भी यही दो कहते हो? (किसी ने कहा– नहीं...) ये बड़ा चक्कर कहती है। अच्छा, वो दो छोटे चक्कर हैं, चलो भई और भी कोई है! (किसी ने कहा– बाप का परिचय) मैं पूछता हूँ, चित्र मुझे वही बताओ, जिसमें गेट वे। वो मालूम होता है कि भई ये गेट वे है इस चित्र में। ये बड़ा समझने की बात है। चलो, और भी कोई है? (किसी ने कहा– राम राज्य और

रावण राज्य) राम राज्य और रावण राज्य, अच्छा वो इसमें गेट बताया। अच्छा!... बिचारा मौन में रहते हैं एकदम, रिटायर लाइफ। (किसी ने कहा– ना बाबा) बोलो! (किसी भाई ने कहा– त्रिमूर्ति) त्रिमूर्ति कहाँ कहा इसने या और किसी ने कहा? (सभी ने कहा– दीदी ने बोला) जो त्रिमूर्ति कहते हैं सो हाथ उठाओ।...त्रिमूर्ति में बहुत हाथ हैं। अच्छा, तो जिसने (किसी ने कहा– त्रिमूर्ति...) तुम भी त्रिमूर्ति के, अच्छा इसमें हाथ है। अच्छा, ये चक्कर किसने कहा? (किसी ने कहा– खन्ना जी) खाली एक खन्ना जी, बस एक ही भगवान है। (किसी ने कहा– इसमें मैंने कहा– चक्कर क्या है?) इसने इस एक ही भगवान है, बाकी सब हैं बंदे। केवल इसने राइट कहा। क्यों राइट कहा, देखो मैं फिर समझाता हूँ। तुमको समझाना ही है गेट वे। अब ये चक्कर में ऊपर में देखो, इस तरफ में है नर्क का गेट, उस तरफ में है स्वर्ग का गेट। वो बरोबर स्वर्ग में लक्ष्मी–नारायण दिखलाते हैं और उसमें तो सभी आसुरी सम्प्र(दाय) देखते हैं और ये भी दिखलाते यहाँ से ये आत्माएँ भागती हैं। समझे ना। एक जाती है स्वर्ग में, एक जाती है शांतिधाम में। अभी गेट तो ये बरोबर है ठीक गोला। (किसी ने कहा– दोनों गोले) एकदम क्लीयर, तुम लोग को सबको (...) और इसके ऊपर ही बड़ी समझानी। यहाँ आदमी देखो कितने हैं नर्क में। स्वर्ग में तो देखो कितने आदमी हैं, स्वर्ग में देखो कितना राज है। भई ये गेट, इस चक्कर का ये जगह जो है। मैं इनसे ये गोला बोला– अच्छा चक्कर में गेट कौन है, दिखलाओ। क्या सारा चक्कर गेट है? नहीं, सारा चक्कर भी गेट नहीं है। बस वो गेट पूरा एकदम। देखो जाती हैं आत्माएँ ऊपर में, निकल जाती हैं, है ना और जाएगा गेट, स्वर्ग का गेट, वो नर्क का गेट। उसमें सुई लगी हुई है, है ना और वो शो करती है। सुई सबसे तीखी है देखो। तो वो सुई दिखलाती है कि ये नर्क अभी ये स्वर्ग होने का है। तो सबसे अच्छा समझाने का ये है फर्स्टक्लास, गेट वे टू स्वर्ग। क्लीयर दिखलाया हुआ ये सिर्फ। खन्ना राइट यानी विचार की बात है ना। तुम भले विचार करो। त्रिमूर्ति क्या, गेट क्या है? नहीं गेट क्लीयर एकदम। ये गोला दिखलाते हैं बिल्कुल अच्छी तरह से और बुद्धि में भी यही रहता है कि अनेक धर्म विनाश, एक धर्म की हम स्थापना कर रहे हैं। बाकी सभी शांतिधाम (...), देखो ये गेट बिल्कुल अच्छा है। वो आत्माएँ जाती हैं, ये हम जानते हैं। वो आत्माएँ शांतिधाम में जाएँगी, सुखधाम में जाएँगी। ये गेट तो बड़ा क्लीयर है और बोलो, चित्र में दिखलाओ हमको ऐसा गेट। विचार करो, इसमें क्या है! (किसी भाई ने कहा– बाबा, झाड़ में)...नहीं–2, झाड़ में कुछ गेट है नहीं। ये क्लीयर यानी समझ की बात है ना। ये तो क्लीयर गेट। हम गेट बोलते हैं, हमको बताओ। झाड़ में गेट कहाँ है? गेट है ही इस गोले में एक्यूरेट। तो गोला ही समझाना चाहिए ना। ये गेट वे... तो आए ना गेट वे, बिल्कुल इस तरफ में देखो नर्क का द्वार, उस तरफ में स्वर्ग का द्वार और बरोबर यहाँ से आत्माएँ भी जाती हैं, वो एक जाएँगे शांतिधाम में, एक जाएँगे सुखधाम में। तो बाबा कहते हैं स्वर्ग का द्वार। तो ये तो अण्डरस्टूड है कि स्वर्ग के द्वार में, तो जो कल्प पहले गए थे स्वर्ग में, वही जाएँगे, बाकी कहाँ जाएँगे? बाकी शांतिद्वार जाएँगे। वो भी द्वार है ना बच्ची। ये फाटक खुलते हैं ना अभी। नर्क का फाटक वो बंद होता है, बाकी शांति और सुख का द्वार खुलते हैं। सो द्वार तो बिल्कुल ये क्लीयर है। बाबा ने पूछा ही ये। ये इसमें दिखलाओ, गेट वे इस चित्र में कहाँ है? वो तो तुम जानते हो कि परमात्मा गेट खोलते हैं। मैं वो नहीं पूछा कि कौन गेट खेलते(खोलते) हैं? गेट हमको दिखलाओ इन सभी चित्रों में। ये देखो सबसे जास्ती फर्स्टक्लास–ते–फर्स्टक्लास ये। इसलिए बैजेज़ भी इनके बताए हैं देखो। खाली गोला नहीं बताय सकते हैं। ये बड़ा है बिल्कुल ही। नहीं तो बाबा की हमेशा दिल

होती है, तो ये जो है ना त्रिमूर्ति, ये दो जो गोले हैं और ये सारा भी गोला, ये सबसे फर्स्टक्लास, फिर सारा चित्र भी कहें अगर; परन्तु बाबा ने पूछा– गेट वे दिखलाओ। वे, गेट वे जो हम अक्षर दिखलाया, दिखलाओ। तो बाबा क्यों ये कहते हैं, समझाते हैं, सबको ले जाओ यहाँ। इससे बहुत क्लीयर होता है कि देखो ये है नर्क, ये है स्वर्ग और देखो इसमें कितने आदमी हैं, कितने अनेक प्रकार के हैं। उसमें देखो एक प्रकार के हैं ना। तो ज़रूर जाते भी हैं ना यानी विनाश भी तो होता है ना। तो सभी जाते हैं। इस विनाश में तो जाने का है ना सबको और तुम जानते भी हो कि बरोबर गेट खुलता है। हम जाएगा, शांतिधाम हो करके फिर हम जाएगा। अभी ये ज्ञान है ना– हम शांतिधाम हो करके फिर सुखधाम जाएगा। हम जानते हैं कि बाकी जो भी हैं, सब शांतिधाम में चले जाएँगे। अभी समझानी देखो कितनी अच्छी है, किसको भी बैठ करके ये (...), बिल्कुल ईज़ी समझानी। भई ये गेट हैं, ये नर्क और ये स्वर्ग। अभी नर्क से स्वर्ग द्वार तो सब तो नहीं जाएँगे ना। देखो ये लक्ष्मी–नारायण का राज्यभाग तो है ना। बाकी देखो खाली–खाली। वहाँ आगे हम लिखते थे– बाकी ये सभी शांतिधाम में जाएँगे। तो देखो, ये गेट हैं– शांतिधाम जाने का और सुखधाम जाने का। देखो, तो बुद्धि में रहना होता है ना, ये बात तो बुद्धि में रहनी है ना हम बच्चों को कि अभी–2 गेट्स खुलते हैं। हम स्वर्ग द्वार जाने के लिए हम पवित्र बन रहे, लायक बन रहे; क्योंकि ये तो राजधानी है। उसमें जितना हम पढ़ेंगे–लिखेंगे, होएँगे बड़े नवाब; रूलेंगे,पिलेंगे,हगेंगे,खाएँगे और सोएँगे, होएँगे खराब। भई ठीक है ना। तो ये सबसे अच्छा चित्र यानी ये तो विचार करने की बात है। समझा ना। तो बाबा ने बताया ना, एक ने ठीक बताया। तो बाबा को रात को ये नहीं ख्याल से आ करके ये सब कहा था! नहीं–2, ये तो अगर कहेंगे, इस चित्र की भी क्या दरकार! ये तो बुद्धि से काम लेना चाहिए कि बाप जब आते हैं और आय करके नई दुनियाँ स्थापन करते हैं तो नई दुनियाँ में तो भारत ही होता है। बाकी आत्माएँ सभी चली जाएँगी शांतिधाम में। इसमें चित्र का भी वास्तव में दरकार नहीं है, ये तो बुद्धि से काम। तो चित्र समझ करके फिर बुद्धि से काम लिया जाता है, फिर चित्र नहीं उठाया जाता है। तो तुम बच्चों को भी देखो सारा दिन समझाने की, इन चित्रों से कौन–सी अच्छी है, जिससे इनको हम क्लीयर अच्छा समझावें। ये तो ठीक है कुम्भकरणों को सिंग हैं। वो मुर्दों को हम पिलाते हैं, नहीं उठते हैं, वो भी नहीं है। वो जो हम लिखते हैं गेट वे अभी, ये अक्षर बहुत अच्छा है बच्ची। अंग्रेजी अक्षर कई–2 बड़े शोभनीक हैं, है ना और हिन्दी में तो बहुत हैं तिक–तिक, तिक–तिक। क्योंकि वो हिन्दी लैंग्वेज कोई है ही नहीं, राँग लैंग्वेज है। समझा ना। हिन्दी लैंग्वेज राँग है; क्योंकि अपन को हिन्दू कहलाते हैं। तो हिन्दी, यहाँ तो अभी अनेक लैंग्वेजेज़ हैं। हिन्दी कोई लैंग्वेज नहीं है। हिन्दी अक्षर ही निकला है हिन्दुस्तान से और ये हिन्दुस्तान है नहीं। इसका नाम असल में, राइट वे में 'भारत' है। कभी भी भारत वा इंग्लैण्ड है, तो इनका नाम फिराय देंगे क्या? ये तो गलियों–वलियों का नाम फिराया जाता है, घर–वर का नाम फिराया जाता है, बाकी सारे खण्ड का नाम थोड़े ही फिराया जाता है। तो ये है उल्लुओं का काम। समझा ना।...भारत, महाभारत, महाभारत की लड़ाई। भारत इसको कहा जाता है ना। "वन्दे मातरम्" तो भी भारत याद आता है, कोई हिन्दुस्तान थोड़े ही याद है। भारत हमारा देश। ये हिन्दुस्तान, तो हिन्दुस्तान के कारण ये हिन्दी लैंग्वेज; नहीं तो हिन्दी लैंग्वेज है नहीं कोई धर्म की। जबकि धर्म ही नहीं है तो लैंग्वेज भी नहीं है। हर एक की धर्म की लैंग्वेज है। इनका धर्म ही नहीं है, लैंग्वेज वरी काहे की? हिन्दी रख दिया। धर्म भी हिन्दू, लैंग्वेज भी हिन्दू। हिन्दू कहो या हिन्दी कहो। है ना। हिन्दू लैंग्वेज हो गई ना।

उसको हिन्दी कर दिया। बाकी लैंग्वेज कोई राइट थोड़े ही है ना। तो सब अनराइटियस। जो–2 भी हैं, सब अनराइटियस। जो कुछ बोलते हैं, जो कुछ चलते हैं, सब अनराइटियस। वो सच खाना, सच पहनना, सच फलाना और वहाँ झूठ खाना, झूठ पहनना, झूठ पहनना– (इसमें) फर्क है ना। बच्चे, सच की तो महिमा कर दी, तो बाकी तो झूठ–2 रह गई ना। तो अभी बच्चों को तो ये याद रहता है ना बच्चे। ये जो लिखते हैं, बहुत अच्छा अक्षर है बच्चे, पर समझाने वाले वो ठक गेट बताऊँ। चलो तुमको ये गेट बताऊँ और एकदम फट ले जाना गेट। नाम लगा हुआ है ना। पीछे इंगलिश में, क्या करें बहुत लैंग्वेजेज, देखो कितनी डिफीकल्ट। बाप कहते हैं– देखो, कितनी डिफीकल्टी है! तब तो इतनी महिमा करते हैं ना– भई इनकी महिमा अपरम्पार। इसकी गत और मत यानी वो तो हैं उनके अक्षर– गत–मत न्यारी; परन्तु पहले तो है मत, पीछे है गत। ये भी अपसाइड–डाउन(आगे–पीछे) कर दिया। पहले है सद्गति के लिए मत देना। तो देखो, कैसे तुम बच्चों को सहज मत देते हैं। श्रीमत यानी भगवान की मत पर चलना होता है ना। बैरिस्टर की मत पर चलने से बैरिस्टर बैरिस्टर ही बनेंगे; डॉक्टर की मत पर चलने से डॉक्टरानी; भगवान की मत पर चलने से भगवान और भगवती बनना होता है और है भी भगवानुवाच्य। अभी खाली फर्क होना है, कौन–सा भगवान? इसलिए बाबा ने ये नया दिखलाया है कि भई ये तो पहले सिद्ध करो। अरे भगवान किसको कहा जाता है वो तो सिद्ध करो। भगवान किसको मालूम नहीं है। किसको भी मालूम नहीं है। अभी यूरोपियन लोग कई कृष्ण को भगवान थोड़े ही मानेंगे बच्चे। बस वो (...); क्योंकि ये स्वर्ग के मालिक हैं ना फिर भी। स्वर्ग के मालिक तो भगवान और भगवती ठहरे, और तभी कौन ठहरे! ब्रह्म में, ब्रह्माण्ड में तो कोई महाराजा–महारानी तो नहीं रखे हैं ना। ये तो हैं यहाँ। हाँ, स्वर्ग भी इस धरती पर, नर्क भी इस धरती पर, धरनी पर है। तो ये स्वर्ग और नर्क... दो बातें बिल्कुल ही न्यारी हैं– हेल और हैविन। तो ये तो बिल्कुल बुद्धि कहती है, वो जो मारी हुई है ना– हेल एण्ड हैविन। क्या...हेल को लाखों बरस हो गया और हैविन पूरा होने में अभी 40 हज़ार बरस है। तो बिचारे घोर अंधियारे में हैं ना। तुमको तो अभी कितना याद है, बस ये अभी–3, हेल टू हैविन जाने के लिए। तो हमको बाप बैठ करके पवित्र बनाते हैं, ऐसे गुणवान बनाते हैं और फिर पवित्र भी बनना है ज़रूर। है ना। तुमको जो कुछ भी फुर्ना है–सर्विस। फुर्ना होता है ना कोई–न–कोई, बस सतोप्रधान कैसे बनें? बाबा तो बताया है कि मामेकम् याद करो। खाते,पीते,चलते,पढ़ते तुम्हें सोच करने की, कोई बैठे रहते हैं ...! वो कर्म करते हैं ...। भक्ति में कर्म करते हो और कोई–न–कोई चित्र को बैठ करके याद करते हो। जो भगत होते हैं सो तो याद करेगा ना। या याद करेगा या माला फेरेगा। अब याद करने के लिए माला दे दी है। राम को याद कैसे करो– राम–8, अभी 'राम–2, राम–2' किसको कहें वो बिचारों को पता नहीं है; परन्तु याद करो। बाबा अभी कहते हैं ना, देखो अभी घड़ी–2 कहते हैं– बच्चे, बाप को याद करो। अभी बाप को याद करो– ये तो सभी बाप बन गए सर्वव्यापी के हिसाब से, याद किसको करें? यानी ड्रामा के प्लैन अनुसार कोई याद ही नहीं कर सकते हैं। तो यहाँ बाप आकर समझाते हैं– हे नास्तिको! तुम नास्तिक बन गए हो, बाप को नहीं जानते हो और कहते हुए– ओ गॉड फादर! गॉड फादर है कौन आखरीन में, पाई का भी पता नहीं। अच्छा, कौन बोलते हैं 'गॉड फादर'? भई आत्मा कहती है। अच्छा, आत्मा क्या है? पाई का भी किसको पता नहीं है। ऐसे कोई हैं मनुष्य यहाँ (...), देखो कहते भी हैं– भई चमकता है सितारा बीच में। ठीक है, भई वो आत्मा हो गई ठीक और वो है परमात्मा। वो भी तो आत्मा हो गई। वो रहने वाली ऊपर,

परे–ते–परे, बड़े–ते–बड़ी। परम कहा जाता है सुप्रीम, ऊँची, सबसे ऊँची। तो ऊँचा–ते–ऊँचा, तो गाया जाता है ऊँचे–ते–ऊँचा भई कौन? भगवत्। तो ऊँचे–ते–ऊँचा कहेंगे– सुप्रीम आत्मा, परम आत्मा। सुप्रीम का दूसरा अक्षर है 'परम'। तो ये बाप आ करके ये सब–कुछ समझाते तो हैं ना। नहीं तो बाबा कहते एक भी मनुष्य नहीं है, जिसको अपने आत्मा का ज्ञान हो यानी मैं आत्मा हूँ और ये शरीर है। ये तो दो चीज़ें तो हैं ही हैं ना। भई आत्मा निकल गई, शरीर को डालो मट्टी में; क्योंकि बना हुआ है पाँच तत्व का। आत्मा तो नहीं बनी हुई है पाँच तत्व की यानी एक चीज़ बनेगी ना पाँच तत्व का। वो आत्मा तो अविनाशी है, बिन्दी है, ये क्या चीज़ से बनेगी। बिन्दी भई क्या चीज़ से बनेगी? कोई तत्व से बनेगी। नहीं, कुछ भी नहीं, बिन्दी है बस। यानी ये भी बताते हैं इतनी छोटी है। अभी किसको मालूम है बच्ची कोई भी, कोई भी साधु,संत,महात्मा, क्यों बाबा अभी ये भी कहते हैं कि इसने तो गुरू बहुत किए हैं ना। मुझे तो कोई भी ऐसा गुरू नहीं मिला, पण्डित फलाना, कान मूँदने वाला, फलाना करने वाला, बहुत ही उदासी–संन्यासी, फलाना–टीरा बहुत। कोई ने ऐसे कभी नहीं सुनाया कि आत्मा क्या है और परमपिता परमात्मा क्या है। वो दोनों की पात(बात) नहीं। तो ऐसे नहीं है कि सिर्फ कोई परमात्मा को नहीं जानते, नहीं, आत्मा को भी नहीं जानते। अगर आत्मा को जान जावे तो परमात्मा को फट जान जावें। बच्चा अपन को जान जाए, तो भला बाप को नहीं जानेगा, वो बच्चा ही कहाँ से निकला! तो इसलिए बाप को आना पड़ता है। पहले–2 रियलाइज़ कराते हैं आत्मा को, तो जो आत्मा का रियलाइज़ करते हो, परमात्मा बिगर कौन रियलाइज़ कराएगा? तो बाप कहते हैं अभी तुम तो समझते हो ना, तुम क्या जानती हो, आत्मा क्या है, कहाँ रहती है, क्या होती है, फलाना है! अच्छा चलो, जानते थे (ऐसे) डॉक्टर लोग भी, आत्मा भई है तो बहुत सूक्ष्म चीज़, इस आँखों से नहीं देखा जाता है। जब इन आँखों से नहीं देखा जाता है तभी ये ट्रायल करने की बात कि हम शीशे में बंद कर देखें। शीशे में बंद करना, इन आँखों से देख ही नहीं सकेंगे तो देखेंगे क्या! तो देखो, दुनियाँ में एक भी देखो तुम्हारे जैसा एजूकेट या नॉलेज वाले दुनियाँ में कोई (नहीं)। बाकी इतना ज़रूर है कि नंबरवार हो। समझा ना। अभी तो इतना तो सबको मालूम पड़ा है– बरोबर आत्मा बिन्दी है। ये तो समझाते भी हैं, परमात्मा बिन्दी है। बाकी हम आत्माओं को, जो पावन से पतित बन गई हैं ज़रूर; क्योंकि हम ऊपर में जो रहते हैं अपने घर, वहाँ तो कोई पतित तो रह नहीं सकती हैं, वहाँ से(पर) तो पावन ही रहेंगे और पावन आते हैं, पतित बनते हैं। फिर पतित से पावन ज़रूर बनते हैं, नहीं तो फिर से पार्ट कैसे बजावे! अभी ये बहुत सहज–ते–सहज बात है अपन को समझना कि 84 पूरा हुआ है और ये तो बिल्कुल कॉमन बात है कि हमारी आत्मा तमोप्रधान हो गई है। तुमको मालूम पड़ा कि बरोबर हम ही 84 जन्म लेते हैं। जो बाप समझाते हैं, एक तो नहीं हो सकते हैं ना बच्ची। एक के लिए तो नहीं बाबा कहेंगे ना। बच्चे तुम अपने जन्मों को नहीं (जानते), तो तुमको बताता हूँ। तो एक को थोड़े ही समझाएगा। वास्तव में बाबा कहते हैं मैं समझाता इनको हूँ, तुम सुन लेते हो। ये सामने हमारे बैठे हुए हैं, मैं इनको सुनाता हूँ। तुमको कैसे सुनाऊँगा.....! तुमको देखूँगा कैसे? तुम्हारे में तो प्रवेश किया है और इनको हम सुनाता हूँ और तुम सुन जाते हो। ये बिचारे सुनते हैं तो यें–2 करते हैं। ये सुनते हैं और बाबा से तो वो ऐसे–2 थोड़े ही करेंगे। तो ये है रथ इनका। तो ये तो समझते जाते हैं, है समझने की बात, जो समझते हैं वो ऐसे–2 करते हैं बरोबर कि

भई ये राइट बात है। तो अभी तो गेट पर नाम तो लिखना है; पर उनका ज्ञान भी तो चाहिए ना फिर। तो उनको पहले–2 गेट वे दिखलाना ही चाहिए ठक यहाँ से ले करके यहाँ। फिर उन लोग को समझाना पड़े कि देखो ये धर्म प्रायःलोप हो गया है, कोई को भी पता नहीं है– हम कोई देवी–देवता धर्म का है। पर हैं तो देवी–देवता धर्म का ना। भले जैसे क्रिश्चियन लोग हैं, पहले तो ज़रूर सतोप्रधान होंगे ना, पीछे मल्टीप्लीकेशन होती जाएँगी, आते जाएँगे, आते जाएँगे, आते जाएँगे, तहाँ कि इस दुनिया में जन्म–पुनर्जन्म लेते–2 तमोप्रधान तो ज़रूर बनेंगी, सारी दुनियाँ पुरानी तो ज़रूर बनेंगी, झाड़ भी तो पुराना ज़रूर बनेगा; क्योंकि है ह्युमन झाड़, अनेक वैराइटी धर्मों का झाड़। इसको कहा जाता है–विराट ये झाड़। इसको विराट नाटक भी कहते हैं। तो ये बच्चे जानते हैं कि बरोबर हिसाब से, ये झाड़ के हिसाब से फिर, इनके हिसाब से, भई ये क्रिश्चियन वो–3 सब पीछे आते हैं; क्योंकि वो तो ज़रूर कोई तो आएँगे ना, ड्रामा बना–बनाया है, कोई कहेंगे– क्यों हमको (...)? कोई वक्त तो हमको टर्न मिलेगा सतयुग में जाने का? नहीं, पर ये तो बना–बनाया है ना। किसको भी नहीं मिल सकता है ना। ये तो खेल बना हुआ है अनेक धर्मों का।..सो भी मनुष्य जानते हैं बरोबर कि सतयुग में आदि सनातन देवी–देवता धर्म है प्राचीन, जिसको फिर हैविन–पैराडाइज़ कहते हैं और ये जानते हैं कि हमारा सबका इतना–2 बरस हुआ अच्छी तरह से। सिर्फ नहीं जानते हैं जो धर्म प्रायः लोप है। था ज़रूर; परन्तु कब था? अभी देखो ये जो शंकराचार्य ना, 10 हज़ार बरस तक तो आ गया ना। वो इतना तो नीचे है नहीं। है ना। सो भी पता नहीं, बोल दिया बिचारे ने। कोई उनको पकड़ेगा, बोलेगा– आपने 10 हज़ार कैसे कहा कल्प की? कल्प तो लाखों बरस का है, 10 हज़ार बरस में 84 लाख जन्म मनुष्य कैसे ले सकेंगे?...कोई होवे तो उनको पकड़ लेवे अच्छी तरह से; परन्तु उस समय में उनसे बात कौन करे? डरते रहते हैं, हाँ कहाँ नाराज़ न हो जावे। चुप, कोई बात मत करो, ये न करो। बात मत पूछो। वाह! ...समझाते हैं अच्छी तरह से– मीठे बच्चों! याद ही तुमको ये रहना– अभी हम जा रहे हैं स्वर्ग में। हम जा नहीं सकते हैं; क्योंकि देखो ना, हम तमोप्रधान हैं ना। हम कैसे जाएँगे, ये आत्मा कहती है ना– हम कैसे जाएँगे फिर? अच्छा घर भी जाएँगे, कैसे जाएँगे, तमोप्रधान हैं। तो सतोप्रधान बनने के लिए बाप ने युक्ति बताई है– बिल्कुल मन्मनाभव–मद्याजी(भव), मामेकम् याद करो; क्योंकि मुझे ही तुम कहते हो– पतित–पावन। अभी जज करो अपनी बुद्धि से कि भला और क्या उपाय हो सकता है मेरे लिए तुमको कहने का! अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो, बस। और तो बाकी तो बहुत यज्ञ,तप,दान तो बहुत ही किए। बाकी ये तो नई बात है ना, लिखी हुई है ना। ऐसे नहीं, भगवानुवाच लिखी हुई है, उसको 5000 बरस हुआ; क्योंकि 5000 बरस पहले अर्थात् 3000 क्राइस्ट के पहले, ये बहुत गाते हैं बच्चे कि ये भारत हैविन था, पैराडाइज़ था। बस इतना जानते, था। कैसे बना था, कहाँ गया, वो कुछ भी नहीं जानते हैं। ये सो भी कोई–2 बोल देते हैं कि बरोबर (...)। तुम तो अच्छी तरह से जानते हैं, दुनियाँ में मनुष्य तो, आगे जानते थे बच्ची ये सभी बातें? ये जानता था? कुछ भी नहीं जानते थे, जैसे सब दुनियाँ में चलते हैं, ये...पाप,विकार फलाना ये सब–कुछ चलते थे, सबका ही चलता है, कोई छूटा थोड़े ही रहते हैं। कोई भी नहीं, दुनियाँ में ऐसे किसको मालूम ही नहीं है कि क्यों, इसको तुम लोग भ्रष्टाचारी क्यों कहते हो संन्यासियों को। वो तो पवित्र हैं, वो तो महान आत्माएँ हैं। अभी महान आत्माएँ कहते हो, फिर कहते हो महान

परमात्माएँ हैं। भला इतना भी अक्ल नहीं उन लोगों को। तुम तो पकड़ भी सकते हो। जब तुम कहते हो उनको 'महान आत्मा', महात्मा माना महान आत्मा, तो फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो 'शिवोऽहम्', परमात्मा क्यों कहते हो अपन को? गाँधी जी भी महान आत्मा यानी अच्छी आत्मा। आत्मा ही तो सब–कुछ है ना, बुरी आत्मा, ये गंदी आत्मा, ये रिलीजश आत्मा। तो आत्मा ही आत्मा ही कहते हैं, फिर परमात्मा कहाँ से आया? और ये भी बहुत सहज है कि सभी बच्चे हैं, सभी बच्चे याद करते हैं बाप को; क्योंकि सभी बच्चों का बाप भी है और साजन (...), साजन माशूक को कहा जाता है और सभी आशिक हैं। बाबा क्लीयर करके बताते हैं। तो अभी जब तुम भक्तिमार्ग में थे तो जानते नहीं थे ना, समय भी नहीं था। इस समय में अभी मैं आया हूँ, तुमको सबको सिखलाता हूँ कि जिसको याद करते थे, वो जो माशूक, वो आया हुआ है और बहुत मीठा माशूक है, मीठा न होता तो ये सभी क्यों याद करते– अल्लाह साईं, अल्लाह मियाँ, खुदा, गॉड फादर, फलाना; क्योंकि ऐसा कोई मनुष्य होता ही नहीं बच्चे, जो उसके मुख से भगवान का नाम न (निकले)। 'हे राम!' भगवान का नाम लिया ना। खाली जानते नहीं हैं, कौन हैं, बिल्कुल नहीं जानते हैं। फिर भी लिंग तो दिखलाते हैं ना,..अशरीरी तो दिखलाते हैं ना। तो देखो, हम आत्माएँ अशरीरी। अशरीरी की पूजा भी तो होती है। आत्माओं की भी पूजा होती है ना बच्ची। तो अभी तुम बच्चे बने कि हम जो पूज्य थे सो अपनी ही आत्माओं को पूजने लगे, आत्माएँ अपनी आत्मा को पूजने लगे। हो सकते हैं, तुम आगे जन्म में कोई ब्राह्मण होंगे। समझा ना! जैसे ये कहते हैं (इस) जन्म में हम ब्राह्मण कुल के थे, पीछे फिर बदल गए हैं और वल्लभाचार्य भी अक्सर करके ब्राह्मण ही होते हैं; परन्तु वो धामा–वामा खाते हैं और फिर अपवित्र तो सभी हैं, पतित तो सभी हैं और वल्लभाचार्य हो या कोई भी ब्राह्मण हो, जो भी पूजा करते हैं, वो सभी विकारी हैं और लगता है भोग निर्विकारी श्रीनाथ जी को, खाते हैं विकारी सब, ब्राह्मण और वो और वो। है ना। तो भोग तो सभी निर्विकारियों को लगते हैं, देवी–देवताओं को लगते हैं, खाते हैं विकारी। वहाँ ये भोग–वोग लगते ही नहीं हैं; क्योंकि ये सभी हैं भक्तिमार्ग। तो बैठ करके समझाते हैं कि थोड़ा विचार–सागर–मंथन करते रहने से तुमको समझाने में बड़ा सहज होगा चित्रों पर। उसके लिए बाबा कहते हैं कि याद में जाओ झट। फाटक कौन खोलने वाला स्वर्ग का? वो तो भगवान बाप है ना और देखो, अभी खोले सो किस द्वारा खोले, उनको शरीर अपना नहीं है या समझावे कैसे, तो तुम कैसे पवित्र बनो? ये जो कहा (कि) भगवानुवाच्य, वाच्य है ना। तो वाच तो चाहिए ना। वाच तो सबको है ना, सभी आत्माओं को वाच्य है। भगवानुवाच्य तो ये जो आत्माएँ हैं, वही शरीर से सुनती हैं; क्योंकि बच्चे हैं। ये अभी तुमको मालूम पड़ता है, डिटेल में गए हो बहुत, बाबा डिटेल में ले गए हैं बहुत। डिटेल में भी तो ले जाते हैं ना, इतना टाइम जो लगता है। कितने डिटेल में ले जाते हैं! डिटेल समझते हो? रेजकारी। ये रेजकारी बताते हैं। देखो कहा था ना– जीवनमुक्ति एक सेकेण्ड में। जैसे झाड़ और बीज– एक सेकेण्ड में हमको सारा झाड़ बुद्धि में आ गया। उत्पत्ति, पालन, संहार सेकेण्ड में आ गया। अभी तुमको इस झाड़ का भी बुद्धि में सेकेण्ड में आ गया और दुनियाँ में ऐसा कोई भी नहीं है जिसको बुद्धि में ये झाड़ का सेकेण्ड में आदि,मध्य,अंत का मालूम हो, एक भी नहीं मनुष्य। तुम्हारे में भी भले ज्ञान मिलता है, तुम यहाँ अच्छा सुनते हो, भूल जाते हो, झरमुई–थरमुई, ये–वो सब। अगर इस सर्विस में लगे रहो। लगे रहेंगे बच्चे, अभी तो थोड़े लगे रहते हैं यानी थोड़े से कोई थोड़े ही

सृष्टि को बाबा का परिचय मिलेगा। ये तो जानते भी हो, देखते भी हो कि आहिस्ते–2 वृद्धि को पाता रहता है। ये झाड़ है नया, इसको देखो कोई मीठा झाड़ होता है ना बच्ची, तो उनको .....या कीड़े लगते हैं या चिड़ियाँ लगती हैं या बंदर लगते हैं या कुछ–न–कुछ लगते हैं। उसके लिए फिर वो लोग दवाई भेज देते हैं। तो बाबा दवाई भेज दिया फर्स्टक्लास अच्छी– मन्मनाभव। इसको भूलेंगे तो कीड़ा खा जाएँगे, माया खा जाएगी और सचपच(सचमुच) कीड़ा खा जाते हैं, कियेरे बन जाते हैं। अभी कियेरी चीज़ क्या काम में आएगी कोई? नहीं, वो तो फेंकी जाती। तो फेंकी जाती है माना वो स्वर्ग में (...), नीचे हो गया ना, वो तो फेंकी गई जैसे। बच्ची, कहाँ ऊँच पद पाना और कहाँ नीचे, वो तो जैसे पुराना पड़ा है, फेंके जाते हैं नीचे में। तो मीठे–2 बच्चों को इतना अच्छा–2 समझाते रहते हैं कि एक तो बहुत–4 मीठे बनो, बाप जैसे, कोई से भी लून–पानी नहीं हो, खीर–खण्ड। जबकि तुमको वहाँ भी ऐसे ही शेर–बकरी खीर–खण्ड कहते हैं ना.., इकट्ठा पीते हैं। उसका अर्थ क्या? कि शेर–बकरी भी खीर–खण्ड ते यहाँ बच्चे भी खीर–खण्ड। बिल्कुल भी किसके साथ ये नहीं। भला अच्छा सर्विस न कर सकते हो, चलो। नहीं सर्विस का ढंग आता है, न है तकदीर में, ऐसे कहेंगे ना बच्ची। वो तो गाया हुआ है– तकदीर नहीं तो तदबीर क्या करें! मास्टर पढ़ाते हैं तो तकदीर बनाने के लिए; परन्तु तदबीर..... तकदीर नहीं, ... नापास हो जाते। ये भी ऐसे ही टीचर है। पढ़ाते तो सबको हैं। फर्क तो तुम सभी देखते हो बरोबर, ऐसे थोड़े ही कि नहीं फर्क देखते हो। स्टूडेण्ट्स पढ़ते हैं स्कूल में, क्या फर्क नहीं देखते हैं– ये कम पास हो जाएगा मार्क्स से, इनकी पढ़ाई बिल्कुल कच्ची है, ये तो कभी लिफ्ट में नहीं आता, कभी ऊपर में भी नहीं आते हैं। हाँ कोई ऐसी सब्जेक्ट है जिसमें, अच्छा मैं कहता हूँ, अच्छा सब्जेक्ट एक है, हमारी भण्डारी की अच्छी सब्जेक्ट है। देखो, वो भी तो बहुतों को सुख मिलता है ना। ये भी सब्जेक्ट है सर्विस की, स्थूल सर्विस की सब्जेक्ट। तो स्थूल सर्विस की सब्जेक्ट, सबसे जास्ती तो भोजन चाहिए ना। अभी भण्डारी न हो तो खाएँगे क्या? तो ये भी अच्छी सब्जेक्ट है ना। अभी भण्डारी भी, भण्डारी को बुलाय करके, भई ये सब्जेक्ट तो ठीक है तुम्हारी। इनमें से भी तुमको मार्क्स मिलती है; परन्तु सिर्फ एक थोड़े ही पढ़ना होता है। नहीं, इसमें तो सभी चाहिए ना बच्ची। इससे ख़जाना, ये बत्ती इसके लिए है ना। साक्षात्कार होते हैं वैकुण्ठ का, अपने स्वर्ग के सोने के घर और फलाना। अब ये है सब बच्चों के पुरुषार्थ के ऊपर; पर बहुत मीठा बच्चों को बनना है, बहुत मीठा। कोई भूल–चूक भी करते हैं तो भी प्यार से, आस्ते बात करना है और मंसा,वाचा,कर्मणा सुख देना है।

अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार, गुडमॉर्निंग।